प्रसार श्रृंखला-1

हरियाणा की माटी के अघड़ रत्न

चौधरी रणबीर सिंह

चौधरी रणबीर सिंह पीठ

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक।

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

हमारे पूर्वज–जिन पर हमें नाज है

हरियाणा का गौरवशाली इतिहास रहा है। इसके बारे में कहा गया है: 'देशोऽस्ति हरयाणाख्यः पृथिव्यां स्वर्गसन्निभः' अर्थात हरयाणा नाम का एक देश है जो धरती पर स्वर्ग के समान है (दिल्ली के निकट सारवान गांव से मिले विक्रमी संवत 1385 के शिलालेख से उद्धृत)। इसकी माटी में शौर्य, तपस्या, बलिदान और न्याय की गंध बसी है। आपसदारी और भाईचारे में रचा–बसा यहां का इंसान अपनी मेहनत पर भरोसा करके गुजर–बसर करने की जीवनशैली का आदी है। इसमें एक गम्भीर व्यवधान ब्रिटिश शासनकाल में आया। गुलामी दौर के इस काले अध्याय के घाव और उससे चिपके पराये लक्षण देश–प्रदेश की काया पर आ चिपके थे जिनसे पूरी तरह अभी भी निपटा नहीं जा सका है। यह एक काम बाकी है।

लेकिन, यह सच है कि गुलामी के दर्द ने यहां के आमजन को झंझोड़ दिया था। 1857 की जंग और इसके बाद छिड़े आजादी आन्दोलन में यहां की युवा–शक्ति और सामान्य जनगण अपने बगावती तेवर में तन कर खड़े हो गए थे, ताकि अपने जीवन को अपने हाथों सवांरने का हक बरकरार रह सके। इसके लिए यहां के आमजन ने अनगिनत कुर्बानियां दीं और बेहद क्रूर हाकिमों के हाथों जुल्म सहे। इन अनगिनत सपूतों में चौधरी रणबीर सिंह एक चमकते सितारे थे। 93 साल पूरे करके पहली फरवरी 2009 को उनका स्वर्गवास हो गया और यह क्षेत्र उनके प्रेरणादायक साये से महरूम हो गया!

उनकी याद में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक ने ''चौधरी रणबीर सिंह पीठ'' के नाम से शोध–केन्द्र की स्थापना की है ताकि अपने इस धरती पुत्र की याद को संजो कर रखा जा सके और युवा पीढी अपने गौरवशाली अतीत से रूबरू होती रहे। चौधरी रणबीर सिंह स्वतन्त्रता आन्दोलन के चमकते सितारे थे और बाद में देश–प्रदेश को गुलामी दौर के घाव से मुक्त कर संवारने में लगे रहे। उनके जीवनकाल पर एक छोटी सी झलक पेश करने वाली यह प्रारम्भिक पुस्तिका पेश है।

'चौधरी रणबीर सिंह पीठ'
म. द. वि., रोहतक

26 नवम्बर, 2009

हरियाणा की माटी के अघड़ रत्न – चौधरी रणबीर सिंह

छब्बीस नवम्बर 2009। सोचते हैं हरियाणा की माटी के अघड़ रत्न, चौधरी रणबीर सिंह का बीती फरवरी को निधन टल जाता तो आज वे अपने जीवनकाल के 94 वर्ष पूरे करते। विकासपथ पर आगे बढने में उनके प्रेरणादायक साये का देश–प्रदेशवासियों को सौभाग्य रहता। अपनी कठिन डगर पर इस लाडले की सौम्य मुस्कराहट ही काफी थी। उनके बिना, शून्य की इस अवधि में यह उनका पहला जन्म दिवस आया है। उनके चले जाने पर यह अहसास गहरा हुआ है कि इस धरती पुत्र के बिछुडने का अर्थ क्या है। सामान्य की तरह, उनके साथ हंसते–बोलते एक पीढी ने नोटिस ही नहीं लिया, शायद याद ही नहीं रखा कि यह अघड़ रत्न जनगण की अमूल्य धरोहर है!

एक दर्द बार–बार सालता रहता है: अपार सम्भावनाओं के इस देश को गुलामी के दौर से गुजरना पड़ा। इतिहास की एक विडम्बना के चलते भारत लम्बी अवधि तक गुलाम रहा। एक चालाक व्यापारी ने इस देश की मौलिक शराफत का लाभ ले कर उसे ठग लिया था; उसकी साजिशों, उसकी करतूतों से यह कराहता रहा! अपनी डगर पर, अपनी कुव्वत से भारत आगे बढता इससे पहले ही उसे बौना बनाने की साजिशें हुईं। वह एक लुटेरी सभ्यता का शिकार हो गया! उसकी काया पर निपट पराये धब्बों ने उसे बदरंग ही कर डाला।

लेकिन, यह भी इतिहास की सीख है कि आजादी यानी अपने जीवन तथा अपने घर को अपने हाथ संवारने का हक इंसान का है; यह

मनुष्य के मनुष्य रहने की शर्त है। यह उसकी फितरत का अभिन्न अंग है। बहुत दिन गुलामी उसे बर्दाश्त नहीं। ब्रिटिश शासनकाल की गुलामी ने भारत के सामान्य विकास को अवरुद्ध ही नहीं किया, उसकी तहजीब, यहां के जीवनमूल्य एवं जीवनशैली को पराये रंग से बदरंग कर डाला था। वह अपनी सम्भावित ऊंचाईयों को लम्बे समय तक छूने से रह गया। फिर एक लम्बी और कठिन आजादी की जंग चली। तब देश–प्रदेश ने फिर से अंगडाई लेना आरम्भ किया है। इस जंग ने देश को तपाया और अब वह कुंदन बनने को बेकरार है। इस जंग में अन्याय के विरुद्ध और इंसाफ के लिए लडाई के यौद्धाओं का एक सिलसिला है जिस पर कोई कौम नाज से सिर ऊंचा कर सकती है। इनमें एक हरियाणा की माटी के दमकते सितारे थे चौधरी रणबीर सिंह।

रणबांकुरे चौधरी रणबीर सिह पर हरियाणा की माटी को नाज है। ऐसे अपने परमवीर चौधरी रणबीर सिंह को भला कौन जगमगाती कौम याद करके सिर नहीं तानेगी! चौधरी रणबीर सिंह पर हमें नाज है। लेकिन, साथ ही हम अपने कर्म को भी पहचानते हैं। इसलिए चाहते हैं कि इस योद्धा की याद को ताजा रखा जाए और आगे बढने में उनसे आवश्यक सबक लेकर मंजिल की ओर अग्रसर हों।

चौधरी रणबीर सिंह हम और आप जैसे सामान्य घर–परिवार के लाडले थे। उन्हें अपने इस परिवेश, अपनी इस विरासत पर गर्व था। वे ''सोने की चम्मच मुंह में लेकर जन्मे'' किसी बिगडैल परिवार की औलाद नहीं थे जिन्हें धन और शौहरत रास्ते में पड़ी मिलती है। वे सच में धरती पुत्र थे और जीवनभर धरती पुत्र बने रहे। उनका जैसा जीवन चरित्र बना, स्वयं की लगन और तपस्या का अद्‌भुत फल था। वे सादगी की प्रतिमूर्ति थे और राजनीति हो अथवा कृषिकर्म पूरी ईमानदारी से इन्हें निभाया और सिर ऊंचा करके जिए! राजनीति में छलकपट, धोखेबाजी अथवा धड़ेबंदी से मुक्त रह कर अपने कर्तव्य का निर्वाह

किया। बेहिचक कहा जा सकता है कि आज की चालू परिभाषा से अलग वे राजनेता ही नहीं, राजनीतिज्ञ (Statesman) के दर्जे पर जा पहुंचे थे। ऐसे व्यक्तित्व को उनके जन्म दिवस पर प्रदेशवासियों का श्रद्धापूर्वक नमन!!

आजादी की पूर्व संध्या पर देश के भावी नक्शे को तैयार करने के लिए संविधान सभा बैठी। इसमें अपने अपने क्षेत्र से एक बढ़कर एक दिग्गज जुटे। बहस हुई। गरमागरमी भी हुई। स्वतन्त्रता आन्दोलन का यह योद्धा जब संविधान सभा में पहुंचा तो उनकी उम्र मात्र 33 वर्ष थी और जब चौधरी रणबीर सिंह देश की भावी तस्वीर घड़ने वाली देश की इस सर्वोच्च सभा में 6 नवम्बर 1948 को पहली बार बोलने के लिए खड़े हुए तो अपने दिल की कसक को बयान करने से नहीं चूके। देश–प्रदेश की भावी तस्वीर को वे जिस रंग में देखना चाहते थे उसका अहसास उक्त भाषण के इन शब्दों में गुंथा हुआ थाः

> '' मैं एक देहाती हूं, किसान के घर में पला हूं और परवरिश पाया हूं। कुदरती तौर पर उसका संस्कार मेरे ऊपर है और उसका मोह एवं उसकी सारी समस्यायें आज मेरे दिमाग में हैं''।

जब भी अवसर रहता चौधरी रणबीर सिंह अपने देश, अपने प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों की व्यथा बयान करते और न्याय की गुहार लगाने से नहीं चूकते। वे कहते ''मैं सोचता हूं कि देश के निर्माण में गांवों को उनका वाजिब हिस्सा मिलना चाहिए और हर एक चीज के अन्दर देहात का प्रभुत्व होना चाहिए''। मात्र कहने तक वे सीमित नहीं रहे। उन्होंने इस सभा में इस सम्बंध का प्रस्ताव भी पेश किया था, जो एक ऐसा ऐतिहासिक दस्तावेज है जिसमें उनके व्यक्तित्व की झलक मिलती है। ऐसे अपने पूर्वज पर भला किसे नाज न होगा। इस महापुरुष की याद को तरोताजा बना कर रखना भावी पीढी की अपनी जरूरत है ताकि उनकी अपनी राह रोशन हो।

संक्षिप्त जीवनवृत

धरती–पुत्र चौधरी रणबीर सिंह एक ऐसे कर्मयोगी थे जिन्होंने अपना सारा जीवन देश और प्रान्त में अपने लोगों के उत्थान हेतु लगा दिया। एक सामान्य किसान परिवार में जन्म लेने वाले चौधरी साहब को उच्च संस्कार विरासत में मिले। इन्ही पारिवारिक संस्कारों का प्रतिफल था कि उन्होने महान उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अपना सर्वस्व दाँव पर लगाया। उनका त्याग, तप, सेवा और संघर्ष पूरे देश एवं समाज के लिए एक अनुकरणीय मिसाल है। प्रखर देशभक्त, स्वतंत्रता सेनानी, भारतीय संविधान सभा के सुधी सदस्य, उच्च कोटि के संसदविद्, एवं किसानों, मजदूरों तथा दलित व पिछड़ों की वेदना को सीने में लिए चौ. रणबीर सिंह ने जीवनपर्यन्त संघर्ष किया।

बाल्यकाल

चौधरी रणबीर सिंह का जन्म एक सामान्य किसान परिवार में हुआ। लेकिन था यह असाधारण परिवार जो अपने आर्य समाजी संस्कारों को संजो कर चल रहा था! उनके पिता ख्याती प्राप्त आर्य समाजी नेता थे। उनकी माता, श्रीमती मामकौर अत्यन्त सुशील एवं कर्तव्यपरायण महिला थीं। ऐसी गुणवान माताश्री की कोख से उनका जन्म 26 नवम्बर 1914 को जिला रोहतक के सांघी गांव में हुआ था।

चौधरी साहब चार भाई–बहनों में तीसरी संतान थे। इनके पिता चौधरी मातू राम जी की सामाजिक एवं शैक्षणिक सेवाएं बड़ी उल्लेखनीय रहीं। उन्होंने जाट स्कूल, रोहतक जैसी शैक्षणिक संस्थाएं स्थापित करके सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में जो अमूल्य योगदान दिया, उसे अब तक याद किया जाता है। निःसन्देह वे भारतीय राष्ट्रीयता के अग्रदूत थे। उनके ला. लाजपतराय, अपने समय के ख्याती प्राप्त इंकलाबी सरदार अजीत सिंह (अमर शहीद सरदार भगतसिंह के चाचा), बाबू मुरलीधर, स्वामी श्रद्धानन्द, आदि पुरानी पीढी

के अनेक राष्ट्रीय नेताओं से घनिष्ठ सम्बन्ध थे। संभवतः चौधरी मातूराम उत्तरी भारत के ऐसे पहले राजनेता थे जो कांग्रेस संगठन और उसके संदेश को गाँव–देहात में लेकर गए। वे प्रारम्भिक दौर में रोहतक जिला कांग्रेस कमेटी के प्रधान भी रहे। कांग्रेस के कर्मठ सिपाही के रूप में उनकी राष्ट्रभक्ति से परिपूर्ण गतिविधियों ने ब्रिटिश सरकार के कान खड़े कर दिये। परिणामस्वरूप, सरकार ने 1907 में उनसे जैलदारी का पद छीन लिया। केवल इतना ही नहीं, पंजाब सरकार के इरादे तो उन्हें देश–निर्वासित करने तक के भी थे, लेकिन वे पूरे नहीं हो पाए।

चौधरी मातू राम महात्मा गांधी के परम भक्त थे। रोलेट एक्ट विरोधी मुहीम तथा असहयोग आंदोलन को सफल बनाने में उन्होंने असाधारण योगदान दिया। 16 फरवरी 1921 को गाँधी जी की कलानौर (रोहतक) में आयोजित ऐतिहासिक सभा की अध्यक्षता चौ. मातू राम ने ही की थी जिसमें अखबारी समाचार के अनुसार 25 हजार से भी अधिक लोगों ने भागीदारी की थी। सभा को संबोधित करते हुए महात्मा गाँधी ने चौधरी मातू राम के व्यक्तित्व एवं कार्यों की तथा बनने वाली पहली 'राष्ट्रीय' संस्था 'जाट राष्ट्रीय स्कूल' की भूरी–भूरी प्रशंसा की।

चौधरी मातू राम के राष्ट्रीय कद और कार्यों को देखते हुए कांग्रेस (स्वराज पार्टी) ने उन्हें 1923 में रोहतक से पंजाब विधान परिषद के चुनावों में खड़ा किया। चुनाव में तो उनके प्रतिद्वंद्वी चौधरी लालचन्द सरकार की मदद और गलत तरीके अपना कर जीत गए, किन्तु हाई कोर्ट ने चौधरी साहब की अर्जी पर गलत तरीके अपनाने के आरोप में फैसला चौधरी मातू राम के हक में दिया। चौधरी लालचन्द न विधायक रहे, न मन्त्री। बाद में हुए चुनाव को जीत कर चौधरी छोटू राम उनकी जगह मन्त्री बने।

ऐसे माहौल में चौधरी रणबीर सिंह की परवरिश हुई। बालक रणबीर सिंह को 'राष्ट्रप्रेम', 'राष्ट्रभक्ति', विरासत में मिली। उन्हें लाला लाजपत राय, सरदार अजीत सिंह, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे अनेक महान देशभक्तों का आशीर्वाद नसीब हुआ। देशभक्ति, समाजसेवा, त्याग एवं

बलिदान वाले पारिवारिक वातावरण ने चौधरी रणबीर सिंह को बचपन से ही जनसेवा के लिए प्रेरित करना शुरू कर दिया था।

शैक्षणिक काल

चौधरी रणबीर सिंह की प्रारम्भिक शिक्षा अपने गाँव सांघी के सरकारी स्कूल में हुई। उन दिनों आर्यसमाज के दूसरे प्रभावी नेता भक्त फूल सिंह, भैंसवाल में गुरूकुल चला रहे थे और चौधरी मातूराम के परम मित्र थे। भक्त फूल सिंह जी के आग्रह पर वर्ष 1924 में बालक रणबीर सिंह को भैंसवाल गुरूकुल में दाखिल करवा दिया गया। इस तरह चौधरी रणबीर सिंह को शैक्षणिक काल में ही आर्य समाज के विचारों एवं सिद्धान्तों का प्रसाद ग्रहण करने का सौभाग्य हासिल हुआ। गुरूकुल की संस्कारिक शिक्षा ने बालक के अन्दर उन गुणों के बीज रोपित किए, जो आगे चलकर पूरे समाज के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बने।

बाद में आर्यसमाज के अन्य मित्रों की सलाह पर चौधरी रणबीर सिंह को उच्च शिक्षा हेतु रोहतक के वैश्य हाई स्कूल में दाखिल कर दिया गया, जहां से उन्होंने वर्ष 1933 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन दिनों यह स्कूल पूरी तरह से राष्ट्रीय रंग में रंगा हुआ था।

देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत पारिवारिक एवं स्कूली वातावरण ने बालक रणबीर सिंह के अन्दर देश के लिए मर–मिटने का जज्बा भर दिया। आगे चलकर रणबीर सिंह ने गवर्नमेंट कॉलेज, रोहतक से वर्ष 1935 में एफ.एस.सी. की परीक्षा पास की और उसके दो साल बाद वर्ष 1937 में दिल्ली के रामजस कॉलेज से बी.ए. डिग्री हासिल की।

उच्च शिक्षा पूरी होते–होते चौधरी रणबीर सिंह के सिर पर केवल और केवल देश को स्वतंत्रता दिलाने का जुनून सवार था।

घर–परिवार

चौधरी रणबीर सिंह के सामने स्नातक शिक्षा समाप्त होते ही एक अहम सवाल खड़ा था। अब वे क्या करें? सरकारी नौकरी, खेतीबाड़ी, व्यापार या वकालत? उस समय के हालात ऐसे थे जिनमें उनके लिए शान और शौहरत हासिल करने वाले दुर्लभ अवसर सामने

थे। वे किस क्षेत्र में जाएं, यह वैचारिक अन्तर्द्वन्द्व सामने था।

इस वैचारिक द्वन्द्व पर उनके अन्दर कूट–कूटकर भरे राष्ट्रसेवा के विचार सब विचारों पर भारी पड़े। उन्होने तय कर लिया कि वे आगे केवल देश की आजादी के लिए संघर्ष में शामिल होंगे। उनके लिए पहले आजादी और फिर अन्य कोई बात महत्वपूर्ण रहेगी। परिवार वालों ने उनके इस विचार का स्वागत किया। इस निर्णय पर उनके पिता चौधरी मातूराम को बेहद सन्तोष का अनुभव हुआ।

इसी बीच उनका विवाह वर्ष 1937 में डूमरखां (जीन्द) के एक सम्भ्रांत परिवार की सुशील कन्या सुश्री हरदेई से हो गया।

संघर्ष के दिन

चौधरी रणबीर सिंह ने आजादी की जंग में उल्लेखनीय एवं अनुकरणीय योगदान दिया। उन्होने दिन–रात एक करके देश को आजाद करवाने की धुन में अपना सुख, ऐश्वर्य, आनंद, अभिलाषाएं आदि सर्वस्व न्यौछावर कर दिया तथा 1940 के दशक से राष्ट्रीय कार्यों में अपनी सक्रिय भागीदारी दर्ज करा दी थी।

वर्ष 1941 में जब व्यक्तिगत सत्याग्रह का कार्यक्रम आया तो चौधरी रणबीर सिंह के लिए सक्रियता से आजादी के लिए लड़े जा रहे आन्दोलन में कूदने का अवसर आ गया था। वे दृढ़संकल्परत होकर अपने पिता चौधरी मातू राम से सत्याग्रह में शामिल होने के लिए आर्शीवाद लेने पंहुच गए। वृद्ध एवं अस्वस्थ पिता ने बड़े गर्व के साथ बेटे को होशियारी देते हुए कहा 'जा बेटा ! ईश्वर तुझे सफलता प्रदान करे। सावधान रह कर, काम करना'।

स्वतंत्रता की जंग में कूदने के साथ ही व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौरान चौधरी रणबीर सिंह पहली बार 5 अप्रैल 1941 को जेल गए। युवा रणबीर सिंह पहली बार जेल जाकर अंग्रेजी सरकार के दमनात्मक क्रूर व्यवहार से परिचित हुए। यह अपनी किस्म का उनका पहला तजुर्बा था, लेकिन उनके इस तजुर्वे ने उनके अन्दर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ जंग लड़ने के संकल्प को और भी बढाने का काम किया। वे

कई गुना ताकत से आन्दोलन में जुट गए। पंजाब सरकार के आदेश से मई 1941 में अन्य कैदियों के साथ चौधरी रणबीर सिंह को भी जेल से छोड़ दिया गया। उनके जेल जाने का सिलसिला चल निकला तो बस फिर चल ही निकला। जैसे ही चौधरी रणबीर सिंह जेल से रिहा होकर घर पहूंचे तो कांग्रेस दल के आदेश आ गए कि 'जो जेल से रिहा कर दिए गए हैं, वे दोबारा सत्याग्रह करें'। उन्होने तुरन्त आदेशों का पालन किया और वे फिर से जेल पहुंच गए।

इस बार उनके लिए जेल का अनुभव पहले से कहीं अधिक कठोर था। जेल का जीवन पहले से कहीं अधिक कठोर था। लेकिन, उन्होने ठीक एक सत्याग्रही की तरह जेल की यातनाओं को हंसी–खुशी से सहन किया। इस बार वे 24 सितम्बर 1941 को जेल से रिहा हुए।

पिताश्री का साया उठा

जब चौधरी रणबीर सिंह इस जंग की साधना में जुटे थे, उन्हीं दिनों उन्हें पिताश्री चौधरी मातू राम के साये से महरूम हो जाना पड़ा। 14 जुलाई 1942 के दिन चौधरी मातू राम जी का देहान्त हो गया। इसपर चौधरी रणबीर सिंह का कहना था

> ''मेरी हालत ऐसी हो गई, मानो मेरी दुनिया ही उजड़ गई हो। बहुत गहरा घाव लगा था।''

निःसंदेह, यह भारी क्षति थी। पिताश्री से अत्यन्त भावुक सम्बंध रखने वाले जवान दिल के दर्द को समझा जा सकता है। साथ ही घर–परिवार के लिए एक समय अपने सिर से बरगद के साये का उठ जाना भारी त्रासदी थी। अत्यन्त पीड़ा की इस घड़ी में चौधरी रणबीर सिंह ने सत्याग्रही के अपने धर्म का उसी तत्परता के साथ निर्वाह किया। उस समय देशभर में भारत छोड़ो आंदोलन का नारा गूंज रहा था। अपने निजी व पारिवारिक दुःख को एक ओर सरका कर वे पिताश्री से प्राप्त शिक्षा के अनुसार, आन्दोनल के मैदान में उसी तरह डटे खड़े थे!

भारत छोड़ो आन्दोलन में शिरकत

भारत छोड़ो आंदोलन वर्ष 1942 में शुरू हुआ था। दूसरा महायुद्ध जारी था। उस समय चौधरी रणबीर सिंह ने अंग्रेज सरकार के 'युद्ध प्रयासों की जमकर भर्त्सना की'। परिणामस्वरूप, सितम्बर 1942 में उन्हें ब्रिटिश सरकार ने तत्काल गिरफ्तार कर लिया।

उन्हें कुछ दिन स्थानीय जेलों में रखा गया और फिर मुल्तान जेल (अब पाकिस्तान) में भेज दिया गया। जेल के खराब वातावरण एवं मामूली सहूलियतों के भी अभाव में चौधरी रणबीर सिंह को आंखों का भंयकर रोग लग गया। साथ ही वे कुछ अन्य व्याधियों के शिकार हो गए। परिणामस्वरूप वे निरन्तर दुर्बल होते चले गए। उनका वजन गिरने लगा। वजन 40 किलोग्राम तक आ पहुंचा।

उनकी बिगड़ती स्थिति को भांपते हुए सरकार ने अप्रैल, 1943 में चौधरी रणबीर सिंह को लाहौर जेल में स्थानांतरित कर दिया। यहां वातावरण कुछ ठीक था। इसके साथ ही यहां इलाज व्यवस्था भी अच्छी थी। जेल में इनका ईलाज चला। फलतः उनकी सेहत में सुधार आया और वे धीरे–धीरे मौत के मुंह से बाहर निकल आए। 24 जुलाई, 1944 को पंजाब सरकार ने उन्हें जेल से रिहा कर दिया।

आजादी की जंग में कूदने के बाद चौधरी रणबीर सिंह की जेल यात्राएं एक तरह से उनकी नियति सी बन गई। भारत छोड़ो आन्दोलन में जेल से रिहा होने के बाद जैसे ही वे अपने गाँव पहुंचे तो रोहतक पुलिस नजरबंदी तोड़ने वाले पुराने केस के सिलसिले में गिरफ्तार करने आ धमकी। पुलिस आने की अग्रिम सूचना उन्हें मिल गई थी और पारिवारिक सलाह के बाद वे पुलिस को चकमा देने में भी कामयाब हो गए थे। लेकिन इसी दौरान दल का आदेश आ गया कि जो लोग अहिंसा में विश्वास रखते हैं और फरार हैं वे 9 अगस्त, 1944 को अपने आप को पेश कर दें। गाँधीवादी विचारों के सच्चे अनुयायी चौधरी रणबीर सिंह ने बिना किसी हिचक एक बार फिर गिरफ्तारी दे दी। इस बार वे 14 फरवरी 1945 तक जेल में रहे।

इस बार जब वे जेल से रिहा हुए तो सरकार ने उन्हें तत्काल नजरबंदी की बेड़ियों में जकड़ने का हुक्म सुना दिया। इस नये हुक्म के तहत उन्हें गाँव छोड़ कर बाहर जाने की पूर्णतः मनाही थी। लेकिन क्या कभी समुद्री ज्वार अथवा किसी जलजले को कोई बांध पाया है? युवा सत्याग्रही चौधरी रणबीर सिंह पर नजरबंदी जैसी पाबंदी का तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ा।

उन दिनों पंजाब विधान सभा के लिए झज्जर का जिमनी चुनाव हो रहा था। पाबंदी की कोई परवाह किए बिना वे कांग्रेस के प्रत्याशी की मदद के लिए झज्जर पहुंच गए। ब्रिटिश सरकार को तुरंत इसकी खबर लग गई और पुलिस उन के पीछे दौड़ा दी। उन्होने तबतक पुलिस को खूब छकाया जब तक उनका काम पूरा नहीं हो गया। चुनाव के बाद उन्होने स्वयं को पुलिस के समक्ष पेश कर दिया। पुलिस ने डिफेंस ऑफ इंडिया रूल्स के तहत उन्हें गिरफ्तार करके जेल भेज दिया। एक वर्ष की सख्त कैद की सजा भुगतने के बाद वे 18 दिसम्बर 1945 को जेल से रिहा हुए।

कांग्रेस के इस वीर युवा सत्याग्रही ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान कुल साढ़े तीन वर्ष की कठोर कैद और दो वर्ष की नजरबंदी को भुगता। उन्होने रोहतक, हिसार, अम्बाला, मुल्तान, फिरोजपुर, सियालकोट, लाहोर (बोर्स्टल और केन्द्रीय) जेलों में बेहद कठिन यातनाएं हंसकर और पूरी शान व स्वाभिमान के साथ सहन कीं।

स्वतंत्र भारत

15 अगस्त 1947 को भारत ब्रिटिश सरकार की पराधीनता से मुक्त हो गया। देश ने आजादी की सांस ली। जश्न मना। चौधरी रणबीर सिंह के अपने शब्दों में,

> 'मन की मुराद पूरी तो हुई, लेकिन कुछ कसर रह गई। देश के टुकड़े हो गए। पंजाब भी बंट गया। बंटवारे के फौरन बाद जो हुआ उससे मन और भी खिन्न हुआ। कई बार जान जोखिम में डाल कर स्थिति को संभालने की कोशिश की पर

नतीजा तसल्लीबख्स नहीं रहा।'

देश के बंटवारे के बाद, हर तरफ हिन्दू–मुसलमानों के बीच दंगे भड़क उठे। चौधरी रणबीर सिंह ने राष्ट्रहित में एक बार फिर दिन–रात एक करके शांति और सद्भावना का वातावरण बनाने में अपनी भूमिका अदा की। रोहतक और आस–पास के क्षेत्रों में उन्होने असंख्य निर्दोष मुसलमानों के जान व माल की हिफाजत की।

रोहतक में स्थिति कुछ संभली तो चौधरी रणबीर सिंह मेवात (गुड़गांव) में पहुंच गए। वहां भी साम्प्रदायिक आग फैली हुई थी। उस आग को बुझाने में उन्होने उल्लेखनीय योगदान दिया। साम्प्रदायिक वातावरण की भयंकर स्थिति को देखते हुए, गांधी जी सद्भावना मिशन पर रोहतक एवं मेवात पहुंचे। गांधी जी ने चौधरी रणबीर सिंह की देशभक्ति एवं सामाजिक सद्भाव से परिपूर्ण कार्यों की खूब प्रशंसा की।

साम्प्रदायिकता के अभिशाप से मुक्ति मिली तो बेघर लोगों को बसाने की विकट समस्या देश के समक्ष पैदा हो गई। इन नित नई समस्याओं से निपटने में भी चौधरी रणबीर सिंह ने सरकार का जबरदस्त सहयोग किया। सरकार ने आगन्तुकों में से काफी लोगों को रोहतक तथा आस–पास के इलाके में बसाया। विस्थापित लोगों की समस्याओं के निराकरण में चौधरी रणबीर सिंह ने स्वयं को लगा दिया। वे बीमार भी पड़ गए, लेकिन कोई परवाह नहीं की। निश्चित तौरपर उनकी यह अनूठी समाजसेवा वन्दनीय है।

संविधान सभा में

राष्ट्र के प्रति अटूट एवं अनुपम सेवाओं तथा कुर्बानियों के मद्देनजर, जुलाई 1947 में चौधरी साहब उस समय के पंजाब (हरियाणा सहित) से भारत की संविधान सभा के लिए चुन लिए गए। वहां उन्होंने संविधान–निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होने गाँवों–देहात की विभिन्न समस्याओं, किसानों, मजदूरों, दलितों, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों आदि हर तबके की वास्तविक स्थिति से न केवल परिचित करवाया, अपितु उनके समाधान हेतु सुझाव भी संविधान सभा के समक्ष प्रस्तावित

किए। चौधरी रणबीर सिंह ने संविधान सभा में जब भी गाँव–देहात व आम जनमानस का मसला आया, अपने लोगों की पैरवी की। उनके हर संबोधन में देहात का मर्म और गरीब व मजदूर लोगों का दर्द बखूबी बयां होता था। एक तरह से आम जनमानस की आवाज बन गए थे, चौधरी रणबीर सिंह।

संविधान सभा में चौधरी रणबीर सिंह ने अपना पहला भाषण 6 नवम्बर, 1948 को जिस अन्दाज में रखा, उसे सुनकर हर कोई उनकी शैली का कायल हो गया। उन्होने अपने पहले भाषण में राष्ट्रभाषा हिन्दी विवाद, देहात की समस्याएं, आरक्षण का मुद्दा और किसानों पर लगे भारी टैक्स आदि को शामिल करते हुए अपने अनूठे ढ़ंग से सुझाव रखे। चौधरी रणबीर सिंह ने अपने भाषण में स्पष्ट कर दिया था कि

> ''मैं एक देहाती हूं, किसान के घर पला हूं और परवरिश पाया हूं। कुदरती तौर पर उसका संस्कार मेरे ऊपर है और उसका मोह और उसकी सारी समस्यायें आज मेरे दिमाग में हैं।''

इस पहले वक्तव्य में उन्होने देहात के हक की बात उठाते हुए कहा

> ''देश के अन्दर उसके निर्माण करने में जितना बड़ा हक देहातियों का होना चाहिए, उतना उनको मिलना चाहिए और हर एक चीज के अन्दर देहात का प्रभुत्व होना चाहिए।''

चौधरी रणबीर सिंह एक क्लासलैस सोसायटी यानी वर्गविहीन समाज के निर्माण के पक्षधर थे। इस पर उन्होने अपना मत रखते हुए कहा,

> ''हम देश के अन्दर एक क्लासलैस सोसाइटी बनाना चाहते हैं तो उस क्लासलैस सोसाइटी के अन्दर अगर हम इस तरह सुरक्षित स्थान देंगे, तो वह क्लासलैस सोसाइटी नहीं बन सकेंगी। जो श्रम करने वाली जातियां हैं, किसान और मजदूर, उनके लिए हम संरक्षण रखें और अगर संरक्षण देना है, तो उन्हीं आदमियों को देना है, जो कि किसान हैं और मजदूर हैं

और उन्हीं को यह सही तौर पर दिया जा सकता है।''

उन्होंने गांधी जी का हवाला देते हुए सरकार में शक्ति के विकेन्द्रीकरण की बात कही। गाँव और शहर के फर्क को बताते हुए, उन्होंने ग्रामीण भारत के सशक्तिकरण का पक्ष रखा।

इसी भाषण के दौरान उन्होंने एक ऐतिहासिक मसौदा पेश किया और कहा कि, सरकार सिंचाई और बिजली के अधिक उत्पादन के लिए योजनाएं बनाए और भोज्य पदार्थों की वृद्धि करे, पशुओं की नस्ल सुधारे तथा उन के वध पर, खास कर 'गोवध पर' रोक लगाने की व्यवस्था करे, जिस से हर व्यक्ति को यथा–जरूरत भोजन, पानी और कपड़ा मिल पाए। अंत में उन्होंने आयकर की तर्ज पर ही कृषि पर कर (लगान) का सुझाव दिया, और छोटी जोतों को बिल्कुल कर से मुक्त करने की बात कही। आप की कही कई बातों को राज्य के निदेशिक सिद्धांतों में शामिल गया तो कुछ पर धीरे–धीरे अमल किया गया।

चौधरी रणबीर सिंह ने 18 नवम्बर, 1948 को संविधान सभा में अलग से हरियाणा प्रान्त के निर्माण का मुद्दा बड़े जोर शोर से उठाया। और उसके निर्माण में मौजूद रूकावटों को बेखौफ होकर सबके सामने रखा।

23 नवम्बर 1948 को आप ने एक अन्य ऐतिहासिक प्रस्ताव रखा कि सरकार किसान की उपज का न्यूनतम मूल्य निर्धारित करे, सहकारी संस्थानों को सबल बनाए और सूदखोरी से किसान को बचाए, उसकी फसलों का बीमा करवाएं। चौधरी रणबीर सिंह ने इसी प्रकार 22 अगस्त, 1949 के अपने भाषण में देहात व शहरी शिक्षा व्यवस्था की तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करके यह साबित कर दिया कि देहात में पढ़ने वाले बच्चों के साथ सरकारी स्तर पर कितना बड़ा छल किया जा रहा है। उन्होने देहात में मौजूद बच्चों के सिविल सेवा में न जा पाने की हकीकत को बड़े सुलझे हुए अन्दाज में प्रस्तुत करते हुए ग्रामीण पृष्ठभूमि से जुड़े बच्चों के शिक्षा स्तर में भारी सुधार एवं लोकसेवा

आयोग में ग्रामीण बच्चों को कुछ ढ़ील देने की पैरवी की।

चौधरी रणबीर सिंह ने इसी तरह संविधान सभा में अपने अनेक सुझाव रखे। उनके द्वारा प्रस्तुत सुझावों की महत्ता इसी तथ्य से सहज स्पष्ट हो जाती है कि उन्होने जो भी महत्वपूर्ण सुझाव रखे उनको राज्य के निदेशक सिद्धांतों में स्थान दिया गया और कुछ पर केन्द्र तथा राज्यों की सरकारें अमल करने में लगी हैं।

चौधरी साहब सन् 1950 से 1952 तक संविधान सभा (विधाई) और भारत की अस्थायी संसद के सदस्य भी रहे।

लोक सभा में

वर्ष 1952 में स्वतन्त्र भारत का पहला आम चुनाव हुआ। गाँव–देहात, गरीब, मजदूर, किसानों के हितों की पैरवी करते–करते चौधरी रणबीर सिंह कांग्रेस पार्टी के सदस्यों में अपना एक अहम स्थान स्थापित कर चुके थे। देहात में भी उनके कद का कोई अन्य नेता उस समय नजर नहीं आता था। परिणामस्वरूप रोहतक लोक सभा सीट के लिए चौधरी रणबीर सिंह को कांग्रेस का प्रत्याशी घोषित किया गया। अपने अटूट संघर्ष, आम जनमानस के प्रति उनका सच्चा लगाव और राष्ट्र उत्थान में उनकी उल्लेखनीय आस्था आदि के चलते चौधरी रणबीर सिंह ने भारी मतों से रोहतक लोक सभा सीट से अपनी जीत का परचम फहराया। इस तरह बड़े शानदार ढ़ंग से उन्होने प्रथम लोक सभा में पदार्पण किया। लोक सभा में पहुंचने के बाद भी उन्होने बदस्तूर देहात की समस्याओं और दबे–कुचले व वंचितों की आवाज को सदन में गुंजाये रखा। इसके परिणामस्वरूप सरकार का ध्यान गाँव की समस्याओं और ग्रामीणों की दयनीय हालत पर गया और चौधरी रणबीर सिंह के सद्प्रयासों के चलते ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की एक नई शुरूआत हुई। प्रथम लोक सभा की पारी में चौधरी रणबीर सिंह के खाते में रोहतक–गोहाना रेल मार्ग, खरखौदा हाईस्कूल, बसन्तपुर, बहुजमालपुर प्राथमिक स्कूल, गाँधी स्मारक गौरड़ आदि अनेक विशेष सामाजिक उपलब्धियां दर्ज हुईं।

वर्ष 1957 में दूसरे आम चुनाव हुए। ग्रामीणों के हितैषी प्रतिष्ठित हो चुके चौधरी रणबीर सिंह को कांग्रेस पार्टी ने एक बार फिर लोकसभा क्षेत्र से अपना उम्मीदवार बनाया। वे अपने अनूठे त्याग, तप एवं समाज के प्रति समर्पण भाव के बल पर ऐतिहासिक विजय हासिल करके लगातार दूसरी बार लोक सभा में विजयी होकर पहुंचे। इस बार भी चौधरी रणबीर सिंह ने दीन–दुःखियों की समस्याओं के निराकरण के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी। वे हमेशा यही सोचते कि 'गाँव में खुशहाली और किसान के चेहरे पर लाली' कैसे आए। अपनी इसी सोच के आधार पर चौधरी रणबीर सिंह ने दिन–रात एक करके विकास के नये आयाम स्थापित किए। उन्होने अपने अनूठे प्रयत्नों से रोहतक मैडिकल कालेज (अब डीम–युनिवर्सिटी) जैसी अनुपम सौगातें समाज को दीं और पूरे पांच सालों तक आप ने आम लोगों की खूब जमकर वकालत की। लगभग वही सारे मुद्दे, जो संविधान सभा में उठाए थे, उन पर विस्तार से बोले।

पंजाब की राजनीति में

सन् 1962 में पंजाब विधान सभा के चुनाव हुए। प्रांतीय नेतृत्व ने चाहा कि अब चौधरी साहब की सेवाएं प्रांतीय क्षेत्र में ली जाएं। अतः आपने कलानौर हलके से पंजाब विधान सभा के लिए चुनाव लड़ा और अच्छे मतों से जीते। पंजाब मंत्रिमंडल में बिजली तथा सिंचाई महकमों के काबीना–स्तर के मंत्री बने और जनहित के कई ऐसे कार्य किए कि आज तक भी लोग याद करते हैं।

सिंचाई के क्षेत्र में विशेष योगदान

सिंचाई के क्षेत्र में किए गए चौधरी साहब के काम निःसंदेह स्वर्णिम अक्षरों में लिखने के योग्य है। इन दिनों की उन की सब से बड़ी उपलब्धि है भाखड़ा बांध के निर्माण कार्य को पूरा कराना। यहां एक ऐतिहासिक संयोग रहा। अपनी मृत्यु से एक दिन पूर्व (8 जनवरी 1945) को हरियाणा के सपूत, चौ. छोटू राम ने राजा बिलासपुर से पंजाब सरकार के लिए, अपने आखरी हस्ताक्षर से, वह भू–भाग लिया

था, जिस पर यहां के दूसरे महान सपूत, चौ. रणबीर सिंह ने भाखड़ा बांध का निर्माण कराया, जिसे भारत के प्रधानमंत्री, पं. जवाहरलाल नेहरू ने 22 अक्टूबर 1963 के दिन राष्ट्र को अर्पित किया।

आप के कार्यकाल में ही पोंग बांध और ब्यास–सतलुज लिंक का निर्माण कार्य भी शुरू हुआ, जिस से हरियाणा को भाखड़ा से ब्यास का पानी मिलने में सहायता मिली। इसी दौरान, पंजाब और यू.पी. के बीच हुआ यमुना के पानी के बंटवारे के समझौते में भी आपने बड़ी दूरदर्शिता से हरियाणा के हितों की रक्षा की। किशाऊ और रेणुका योजनाओं की रूप–रेखा, जिनकी मंजूरी भारत सरकार ने हाल ही में दी है, और गुड़गाँव नहर योजना के बनाने के प्रस्ताव आप के समय में ही मंजूर हुए थे। ऐसी ही कई अन्य योजनाओं को आप ने शुरू करने की व्यवस्था की। आप के इन कामों से ही पंजाब और हरियाणा में हरित क्रांति सफल हुई।

'हरियाणा के गठन में विशेष योग

हरियाणा के निर्माण की चौधरी रणबीर सिंह के दिल में बेहद कड़ी कसक थी। इस सन्दर्भ में उनका मानना था कि 1857 की क्रांति के बाद हरियाणा को पंजाब में मिलाने का फैसला एकदम गलत था। जब आप पंजाब में मंत्री थे तब हरियाणा के पिछड़े क्षेत्र का आप विशेष ख्याल रखते थे – खासकर अपने महकमों में। इस से पंजाब के बहुत से भाई नाराज रहते थे। कई बार मुख्यमंत्री से भी खिंच जाती थी। लेकिन आप सदैव यह दलील देकर सबको चुप कर देते थे कि परिवार में गरीब और बीमार का विशेष ध्यान रखना पड़ता है, और हरियाणा को आपने दोनों ही स्थितियों में पहुंचा रखा है!

एक समय पर अलग हरियाणा के गठन का सवाल खड़ा हो गया। चौधरी साहब ने इस अवसर को गम्भीरता से लिया। जब हरियाणा की मांग जोर पकड़ने लगी तो आप ने इसके औचित्य से केन्द्र तथा स्थानीय नेतृत्व को पूरी तरह आश्वस्त किया। पंजाब

मन्त्रीमण्डल का सदस्य रहते हुए अलग गठन के समय आपने हरियाणा के हितों की भरपूर वकालत की। अबोहर–फाजिल्का के हिन्दी भाषी क्षेत्र को पंजाब को देने का आप ने मन्त्री रहते हुए विरोध किया। शाह हदबंदी आयोग के समक्ष इस सवाल पर डट कर वकालत की। यद्यपि इस विषय में सफलता नहीं मिली, पर कई महत्त्वपूर्ण फैसले हरियाणा के हित में करवाने में आप सफल हुए।

हरियाणा राज्य में

चौधरी रणबीर सिंह जैसे महान लोगों के अमूल्य योगदान से 1 नवम्बर, 1966 को हरियाणा प्रदेश अस्तित्व में आया। अलग राज्य बनने के बाद, पंजाब विधान सभा में जितने भी हरियाणा क्षेत्र के विधायक थे उनसे हरियाणा विधान सभा बना दी गई थी। उन्हीं विधायकों में से हरियाणा का पहला मंत्रीमंडल बना। चौधरी साहब फिर काबीना मंत्री बने। उस समय प्रान्त हर लिहाज से पिछड़ा प्रदेश था। परन्तु, लोगों की मेहनत से यह शीघ्र ही समृद्ध एवं सम्पन्न राज्य बन गया। इसमें चौधरी साहब की भूमिका बहुत अहम थी।

इस दौरान एक तरफ तो हरियाणा के समग्र विकास के लिए लोगों में आकांक्षा ने जन्म लिया, दूसरी तरफ राजनीतिक क्षेत्र में संकीर्णता, स्वार्थ–भावना और 'आयाराम–गयाराम', 'जात–पात' एव 'धड़ेबंदी' का भयंकर जाल फैलता चला जा रहा था। राजनीतिक वातावरण के इस दूषित चेहरे ने चौधरी रणबीर सिंह हुड्डा को अन्दर से तोड़कर रख दिया। उनका मन राजनीति से धीरे–धीरे ऊबता चला गया। ऐसा हो भी क्यों न! वे तो निश्छल, निष्कपट भाव से सच्चे राजनीतिज्ञ थे। 1967 में चुनाव हुए तो उन्हें किलोई क्षेत्र से नामित कर दिया गया। थोड़े दिन बाद राज्य में राष्ट्रपति शासन लग गया। 1968 में फिर चुनाव हुए। उन्होंने एकबार फिर चिरपरिचित अन्दाज में भारी मतों से विजय हासिल की। लेकिन संकीर्ण राजनीति से वे मन–मस्तिष्क से घुटन महसूस करते रहे।

राज्य सभा में

उन दिनों केन्द्रीय नेतृत्व ने जब राज्य सभा में आने पर जोर दिया तो आप 4 अप्रैल 1972 को राज्य सभा में पहुंच गए। वहां, पूर्ववत, गरीब, गाँव और हरियाणा राज्य की खूब जोरदार वकालत की और इनके लिए कितने ही अच्छे कार्य करवाने में सफल हुए। इन दिनों आप अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी के सदस्य रहे और कांग्रेस संसदीय दल (राज्य सभा) के उप–नेता भी चुन लिए गए। श्रीमती इन्दिरा गांधी सदन की नेता थी। प्रधानमंत्री होने के नाते इन्दिरा जी सदन के ज्यादातर मसले आप पर ही छोड़ देती थीं।

आप की ईमानदारी, निष्पक्षता और उदारता में इन्दिरा जी को पूरा विश्वास था। अतः वह कई राजनैतिक विषयों पर भी, खासकर गाँवों तथा गरीबों से सम्बद्ध बातों तथा पंजाब और हरियाणा के मसलों पर, आप से सलाह–मशविरा करती रहती थीं।

पार्टी की जिम्मेदारियां

राज्य सभा के काम के अतिरिक्त, इन दिनों कांग्रेस संगठन को सशक्त बनाने में भी आप ने बहुत काम किया। हरियाणा में उन दिनों कांग्रेस संगठन में कमजोरी आ गई थी। उसे चुस्त–दुरूस्त बनाने हेतु आपको प्रदेश कांग्रेस का 1977 से 1980 तक अध्यक्ष बनाया गया। आपकी मेहनत और ईमानदारी रंग लाई और शीघ्र ही 'बीमार' दल को काफी स्वास्थ्य लाभ हुआ।

राजनीति से सन्यास

1978 में जब आप की राज्य सभा की सदस्यता की अवधि समाप्त हुई, तो आपने एक दिन अचानक सक्रिय राजनीति से सन्यास लेने की बात कह डाली। सभी को आश्चर्य हुआ – इन्दिरा जी को भी। उस समय, जैसा कि ऊपर उल्लेखित है, राजनीति में आप का खूब ऊँचा कद था और आप की उपादेयता को सब मानते थे। अतः सन्यास की बात सुन कर सब तरफ प्रश्नों की बौछार होने लगी – क्यों किया ऐसा?

आप का जवाब था,

> 'राजनीति के अतिरिक्त और भी तो बहुत–से क्षेत्र हैं जहां मेरी जरूरत है। राजनीति में बहुत रह लिए, अब यहाँ भी कुछ करना चाहिए।'

उल्लेखनीय है कि चौधरी साहब पहले से ही हरिजन सेवक संघ, पिछड़ा वर्ग संघ, भारत कृषक समाज, आदि संगठनों से जुड़े हुए थे। सक्रिय राजनीति की वजह से इन्हें पूरा समय नहीं दे पाते थे। इस बात से उन्हें सदैव आत्म–ग्लानि रहती थी। सन्यास का फैसला इसी जिम्मेदारी को ठीक तरह से संभालने के लिए था। कांग्रेस संगठन की जिम्मेदारी के बाद, अब आपने इन संस्थाओं को खूब समय दिया और काफी महत्वपूर्ण काम किए।

इसके इलावा, आप ने स्वतंत्रता सेनानियों की स्थिति की तरफ भी ध्यान दिया। आप के अपने शब्दों में,

> 'वे (स्वतंत्रता सेनानी) अब बुढ़े हो चले थे। उन की उपेक्षा भी हो रही थी'।

अपने मित्र श्री शीलभद्र याजी और प्रो. एन.जी. रंगा के साथ मिलकर उन्होंने स्वतन्त्रता सेनानियों को समय देना आरम्भ किया और उनकी समस्याओं के निराकरण पर ध्यान लगाया। श्रीमती इन्दिरा गांधी से उनके लिए, 1972 में, पेंशन मंजूर कराई। 1980 में श्रीमती इन्दिरा गांधी ने इस पेंशन योजना को स्वतंत्रता सेनानी सम्मान पेंशन का नया रूप दिया। बाद में, राजीव गांधी तथा इन्द्र कुमार गुजराल ने पेंशन में और भी वृद्धि की। बहुत–से राज्यों में भी ऐसा ही हुआ।

आप की रहनुमाई में स्वतंत्रता सेनानियों के कल्याणार्थ और भी बहुत से कार्य, अखिल भारतीय स्वतंत्रता सेनानी संगठन और अखिल भारतीय स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी संगठन द्वारा किए गए। आज लगभग 1 लाख 63 हजार स्वतंत्रता सेनानी तथा उन की विधवाओं को

सम्मान पेंशन और अन्य सुविधाओं की वजह से जीवन सुख से व्यतीत हो रहा है।

दुःखद विदाई

हरियाणा की माटी के अनमोल अघड़ रत्न, राजनीतिकों के लिए आदर्श, एक निश्छल कर्मठ समाजसेवी अपने आदर्श एवं प्रेरणामयी जीवन के 94 वसन्त देखने से पूर्व चौधरी साहब ने गत 1 फरवरी 2009 को बड़ी शान, सुकून और शौहरत के साथ अन्तिम सांस ली और अपने लाखों प्रशंसकों को बिलखता छोड़ चले गए। उस दिन जब आकाशवाणी दिल्ली से 'भारत की संविधान सभा के आजीवन सदस्य, पंजाव व हरियाणा विधानसभाओं तथा काबीनाओं के पूर्व सदस्य, प्रखर राष्ट्रभक्त, महान स्वतंत्रता सेनानी, गांधी जी के अनन्य भक्त और गरीब, मजदूर, किसान, दलित एवं पिछड़ों के मसीहा इस दुनिया को अलविदा' वाला समाचार प्रसारित हुआ तो तत्क्षण वज्रघात सा हुआ।

एक साधारण व्यक्ति की असाधारण उपलब्धियों की गौरव गाथा से हरियाणा की माटी का कण–कण गूंज रहा है। आज 26 नवम्बर, 2009 को चौधरी रणबीर सिंह का 94 वां और उनकी अनुपस्थिति में पहला जन्मदिवस है। निःसन्देह इस दिवस पर हर हरियाणावासी के दिलो–दिमाग में उनकी याद ताजा है। यह दिवस एक प्रेरणा–दिवस बन गया है। उनका सहज स्वाभाव, उनकी ईमानदारी, कर्मठता, उनका समर्पणभाव, सौम्यता, कर्त्तव्य परायणता, त्याग, तप व देशभक्ति किसी भी सहज–हृदय व्यक्ति के लिए प्रेरणा का झरना है।

सादर नमन

'चौधरी रणबीर सिंह पीठ' प्रान्तवासियों के साथ मिल कर इस महान विभूति को उनके जन्म दिवस पर सहस्त्र नमन करती है।

चौधरी रणबीर सिंह : संक्षिप्त जीवन घटनाक्रम

वर्ष	विवरण
1914 (26 नवम्बर)	: जन्म (रोहतक जिले के सांघी गाँव में)
1920	: प्राथमिक शिक्षा के लिए गाँव के स्कूल में प्रवेश।
1924	: प्राथमिक शिक्षा पूर्ण
1933	: मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण
1937	: बी.ए. उत्तीर्ण
1937	: गृहस्थ जीवन में प्रवेश
1941	: सक्रिय राजनीति में प्रवेश
1941 (5 अप्रैल)	: प्रथम जेल यात्रा (व्यक्तिगत सत्याग्रह)
1941 (24–25 मई)	: जेल से रिहा
1941	: दूसरी जेल यात्रा (एकता आन्दोलन)
1941 (24 दिसम्बर)	: जेल से रिहा
1942 (14 जुलाई)	: पिताश्री का देहांत
1942 (24 सितम्बर)	: तीसरी जेल यात्रा (भारत छोड़ो आन्दोलन)।
1943 (25 अप्रैल)	: मुल्तान से लाहौर जेल में
1944 (24 जुलाई)	: जेल से रिहा
1944 (28 सितम्बर)	: चौथी जेल यात्रा (नजरबंदी उल्लंघन)
1944 (7 अक्तूबर)	: रोहतक जेल से अम्बाला जेल में
1945 (14 फरवरी)	: जेल से रिहा

1945	: पुनः गिरफ्तारी।
1945 (18 दिसम्बर)	: जेल से रिहाई।
1947 (10 जुलाई)	: संविधान सभा सदस्य निर्वाचित
1947 (14 जुलाई)	: संविधान सभा सदस्यता ग्रहण
1948 (6 नवम्बर)	: संविधान सभा में प्रथम भाषण
1952	: रोहतक लोकसभा सीट से विजयी
1957	: दूसरी बार हुए विजयी,
1962	: पंजाब विधान सभा में कलानौर से विजयी
1962	: पंजाब में बिजली व सिंचाई मंत्री
1966 (1 नवम्बर)	: हरियाणा–गठन।
	: मंत्री पद पर नियुक्त
1968 (12–14 मई)	: मध्यावधि चुनाव। पुनः विजयी
1972 (अप्रैल)	: राज्यसभा के लिए चुने गए
1977	: हरियाणा कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष बने
1978	: राज्यसभा में कार्यकाल सम्पन्न
1980	: हरियाणा कांग्रेस अध्यक्ष कार्यकाल सम्पन्न
2009 (1 फरवरी)	: स्वर्गवास
2009 (2 फरवरी)	: रोहतक में 'संविधान–स्थल' पर अंत्येष्टि

'देशोऽस्ति हरयाणाख्यः
पृथिव्यां स्वर्गसन्निभः'

अर्थात हरियाणा नाम का एक देश है
जो धरती पर स्वर्ग के समान है

(दिल्ली के निकट सारवान गांव से मिले विक्रमी संवत 1385 के शिलालेख से उद्धृत)

प्रकाशक :
चौधरी रणबीर सिंह पीठ
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक।